राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

ना साम्प्रदायवाद, ना जातिवाद, केवल राष्ट्रवाद

इन्कलाब भारत

3:18 pm

विश्वगुरु बनने हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने की आवश्यकता : प्रो. मुरली मनोहर पाठक

मैत्रेयी महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत महासम्मेलन का भव्य उद्घाटन

नई दिल्ली। दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित मैत्रेयी महाविद्यालय, अमेरिका के इन्स्टीट्यूट ऑफ एड्वांस्ड साइंसेज और काउंसिल ऑफ इंडिक स्टडीज एंड रिसर्च (सीआईएसआर) के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत महासम्मेलन (आईएससी) का दीप प्रज्वलन और मंगलाचरण के साथ शानदार शुभारंभ हुआ। इस सम्मेलन का विषय एक्सप्लोरिंग लिटरेरी एंड साइंटिफिक प्रॉस्पेक्टिव इन कॉस्मोलॉजी है।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के यशस्वी कुलपति प्रो. मुरली मनोहर पाठक सम्मिलित हुए। सम्मानित अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी और बतौर विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध, मानविकी एवं समाज-विज्ञान के डीन प्रो. अनिल राय भी उपस्थित रहे। इस मौके पर मैत्रेयी महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सम्मेलन के सफल आयोजन की शुभकामनाएं दीं।

मुख्य अतिथि प्रो. मुरली मनोहर पाठक ने सप्रमाण ऋग्वेद

के सूत्रों में सृष्टि की उत्पत्ति के संदर्भ को उपस्थापित किया। उन्होंने कहा, सृष्टि विज्ञान के रहस्यों को जानने के लिए संस्कृत और विज्ञान के विद्वानों को मिलकर शोध करना चाहिए, ताकि हम सृष्टि के रहस्यों को विश्वभर में उजागर कर सकें। यह भारत के विश्वगुरु बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने पर भी बल दिया। सम्मानित अतिथि के रूप में विद्यमान सीआईएसआर के चेयरपर्सन और डीयू के डीन ऑफ़ स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को रोचक तरीके से संबोधित करते हुए बिग बैंग थ्योरी और संस्कृत साहित्य में सृष्टि विज्ञान पर अत्यंत विस्तार से चर्चा की। विशिष्ट अतिथि प्रो. अनिल राय ने संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए शुभकामना देते हुए सम्मेलन हेतु निर्धारित विषय को अतीव महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक बताया। गौरतलब है कि संगोष्ठी संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने पीपीटी के माध्यम से सम्मेलन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इसके बाद अतिथियों ने अपने करकमलों से शोध स्मारिका का अनावरण किया। इस सम्मेलन में अब तक 50 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए जा चुके हैं। सम्मेलन का समापन कल होगा, जिसमें देश-विदेश के उन विद्वानों एवं प्रशासकों को सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने संस्कृत के प्रचार-प्रसार में निरंतर योगदान दिया है। उन्हें सुरभारती समुपासक, वाग्भूषण, वाग्श्री और ऋषि अथर्वन सम्मान से सम्मानित भी किया जाएगा।

3:18 pm

थ।

विश्वगुरु बनने हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने की आवश्यकता-प्रो. मुरली मनोहर पाठक

(आधुनिक राजस्थान)नई दिल्ली। दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित मैत्रेयी महाविद्यालय, अमेरिका के इन्स्टीट्यूट ऑफ एड्वांस्ड साइंसेज और काउंसिल ऑफ इंडिक स्टडीज एंड रिसर्च (सीआईएसआर) के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत महासम्मेलन (आईएससी) का दीप प्रज्ज्वलन और मंगलाचरण के साथ शानदार शुभारंभ हुआ। इस सम्मेलन का विषय एक्सप्लोरिंग लिटरेरी एंड साइंटिफिक प्रॉस्पेक्टिव इन कॉस्मोलॉजी है। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के यशस्वी कुलपति प्रो. मुरली मनोहर पाठक सम्मिलित हुए। सम्मानित अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी और बतौर विशिष्ट अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय संबंध, मानविकी एवं समाजविज्ञान के डीन प्रो. अनिल राय भी उपस्थित रहे। इस मौके पर मैत्रेयी महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सम्मेलन के सफल आयोजन की शुभकामनाएं दीं। मुख्य अतिथि प्रो. मुरली मनोहर पाठक ने सप्रमाण ऋग्वेद के सूत्रों में सृष्टि की उत्पत्ति के संदर्भ को उपस्थापित किया। उन्होंने कहा, सृष्टि विज्ञान के रहस्यों को जानने के लिए संस्कृत और विज्ञान के विद्वानों को मिलकर शोध करना चाहिए, ताकि हम सृष्टि के रहस्यों को विश्वभर में उजागर कर सकें। यह भारत के विश्वगुरु बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने पर भी बल दिया। सम्मानित अतिथि के रूप में विद्यमान सीआईएसआर के चेयरपर्सन और डीयू के डीन ऑफ़ स्टूडेंट्स वेलफेयर प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को रोचक तरीके से संबोधित करते हुए बिग बैंग थ्योरी और संस्कृत साहित्य में सृष्टि विज्ञान पर अत्यंत विस्तार से चर्चा की। विशिष्ट अतिथि प्रो. अनिल राय ने संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए शुभकामना देते हुए सम्मेलन हेतु निर्धारित विषय को अतीव महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक बताया। गौरतलब है कि संगोष्ठी संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने पीपीटी के माध्यम से सम्मेलन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इसके बाद अतिथियों ने अपने करकमलों से शोध स्मारिका का अनावरण किया। इस सम्मेलन में अब तक 50 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए जा चुके हैं। सम्मेलन का समापन कल होगा, जिसमें देश-विदेश के उन विद्वानों एवं प्रशासकों को सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने संस्कृत के प्रचार-प्रसार में निरंतर योगदान दिया है। उन्हें सुरभारती समुपासक, वाग्भूषण, वाग और ऋषि अथर्वन सम्मान से सम्मानित भी किया जाएगा। उद्घाटन सत्र में लगभग 250 प्रतिभागियों ने सहभागिता की तथा मंच का कुशल संचालन डॉ. धर्मेन्द्र कुमार और डॉ. नूपुर चावला ने किया जबकि डॉ. अनीता देवी ने सम्मानित अतिथियों के व्यक्तित्व से सभा को रूबरू किया।

संस्कृत केवल एक भाषा नहीं अपितु जीवन पद्धति है : प्रो. रमेश कुमार पांडेय

मैत्रेयी महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का समापन एवं सम्मान समारोह

नई दिल्ली।डीयू से संबद्ध मैत्रेयी महाविद्यालय, अमेरिका के इन्स्टीट्यूट ऑफ एड्वांस्ड साइंसेज एवं काउंसिल ऑफ इंडिक स्टडीज एंड रिसर्च (सीआईएसआर) के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन (आईएससी) का समापन हो गया। इसमें विद्वानों का सम्मान समारोह भी किया गया। समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रमेश कुमार पांडेय सम्मिलित हुए। सभी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा ब्रह्मांड की भाषा है और यह केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी जीवन पद्धति है, हमारी संस्कृति है। आज संस्कृत भाषा में केवल भारत की ही भाषा नहीं है। यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने अपने वक्तव्य में चाणक्य की उक्ति को दोहराया और कहा कि संस्कृत भाषा हमें निर्भय बनाती है। हमें जीवन में दान, अध्ययन और कर्म अपने सामर्थ्य के अनुसार नित्य करना चाहिए। यह करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं परम धर्म है। इस अवसर पर मैत्रेयी महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सम्मेलन की मुख्य–मुख्य बातों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस सम्मेलन में हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। उन्होंने सम्मेलन की सफलता के लिए संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह के साथ–साथ पूरी आयोजन समिति को बधाई दी। गौरतलब है कि सम्मेलन में 50 से अधिक गुवत्तापूर्ण शोधपत्र पढ़े गए, जिनमें से कुछ प्रजेंटर्स अमेरिका से थे जबकि इसमें एक जार्जिया और एक दक्षिण कोरिया से आई शोधछात्रा भी शामिल है। समापन सत्र के दौरान ऐसे संस्कृत विद्वानों एवं प्रशासकों को भी सम्मानित किया गया, जो संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार एवं प्रोत्साहन देने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। प्रशासनिक क्षेत्र से मिरांडा हाउस महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. विजयलक्ष्मी नंदा एवं किरोड़ीमल महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. दिनेश खट्टर को सुरभारती समुपासक सम्मान से सम्मानित किया गया। यही सम्मान इस वर्ष संस्कृत विद्वानों की श्रेणी में प्रो. दया शंकर तिवारी एवं प्रो. कौशल पंवार को दिया गया। जबकि वाग्भूषण सम्मान डॉ. पंकज कुमार मिश्र, डॉ. कृष्ण मोहन पांडेय और प्रो. सुषमा चौधरी को मिला। तकनीकी रूप से संस्कृत को बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान हेतु डॉ. सुभाष चंद्र, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ.अवनींद पांडेय और डॉ. अवधेश प्रताप सिंह को ऋषि अथर्वन सम्मान से नवाज़ा गया। जबकि डिप्टी डीन डॉ. चंद्र प्रकाश को वाग्श्री सम्मान मिला, जो ऐसे युवा प्रशासनिक पदाधिकारियों को दिया जाता है, जो संस्कृत भाषा के प्रति अत्यंत सकारात्मक सोच रखते हुए इसे आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने विविध सम्मान श्रेणियों के बारे में बताते हुए सभी सम्मान प्राप्तकर्ताओं का परिचय दिया। इसी क्रम में पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपने–अपने अनुभव साझा करते हुए सम्मेलन हेतु अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के अंत में डॉ. ज्योति सिंह ने सभी गणमान्य अतिथियों का और इस कार्यक्रम की सफलता में योगदान देने वाले सभी सहयोगियों, छात्रों और गैर शिक्षक कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

संस्कृत केवल एक भाषा नहीं जीवन पद्धति है : प्रो. रमेश

नई दिल्ली (एसएनबी)। दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध मैत्रेयी महाविद्यालय, अमेरिका के इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड साइंसेज एवं कॉउंसिल ऑफ इंडिक स्टडीज एंड रिसर्च (सीआईएसआर) के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन (आईएससी) का समापन हो गया। इसमें विद्वानों का सम्मान समारोह भी आयोजित हुआ।

■ **मैत्रेयी कॉलेज में अंतरराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का समापन व सम्मान समारोह**

समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रमेश कुमार पांडेय सम्मिलित हुए। सभी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए प्रो पांडेय ने कहा कि संस्कृत भाषा ब्रह्मांड की भाषा है और यह केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी जीवन पद्धति है, हमारी संस्कृति है। आज संस्कृत भाषा में केवल भारत की ही भाषा नही है। यह अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने अपने वक्तव्य में चाणक्य की उक्ति को दोहराया और कहा कि संस्कृत भाषा हमें निर्भय बनाती है। हमें जीवन में दान, अध्ययन और कर्म अपने सामर्थ्य के अनुसार नित्य करना चाहिए। यह करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं परम धर्म है।

इस अवसर पर मैत्रेयी कॉलेज की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सम्मेलन की मुख्य-मुख्य बातों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस सम्मेलन में हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। उन्होंने सम्मेलन की सफलता के लिए संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह के साथ-साथ पूरी आयोजन समिति को बधाई दी।

मैत्रेयी महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन का समापन एवं सम्मान समारोह

नई दिल्ली (**संस्कार न्यूज**) डीयू से संबद्ध मैत्रेयी महाविद्यालय, अमेरिका के इन्स्टीट्यूट ऑफ एड्वांस्ड साइंसेज एवं कॉउन्सिल ऑफ इण्डिक स्टडीज एण्ड रिसर्च (सीआईएसआर) के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन (आईएससी) का शानदार समापन हो गया जिसमें विद्वानों का सम्मान समारोह भी आयोजित हुआ। समापन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. रमेश कुमार पांडेय सम्मिलित हुए। सभी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा ब्रह्मांड की भाषा है और यह केवल एक भाषा नहीं बल्कि हमारी जीवन पद्धति है, हमारी संस्कृति है। आज संस्कृत भाषा में केवल भारत की ही भाषा नहीं है। यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने अपने वक्तव्य में चाणक्य की उक्ति को दोहराया और कहा कि संस्कृत भाषा हमें निर्भय बनाती है। हमें जीवन में दान, अध्ययन और कर्म अपने सामर्थ्य के अनुसार नित्य करना चाहिए। यह करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं परम धर्म है।

इस अवसर पर मैत्रेयी महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. हरित्मा चोपड़ा ने सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया और सम्मेलन की मुख्य-मुख्य बातों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस सम्मेलन में हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। उन्होंने सम्मेलन की सफलता के लिए संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह के साथ-साथ पूरी आयोजन समिति को बधाई दी। गौरतलब है कि सम्मेलन में 50 से अधिक गुवत्तापूर्ण शोधपत्र पढ़े गए, जिनमें से कुछ प्रजेंटर्स अमेरिका से थे जबकि इसमें एक जार्जिया और एक दक्षिण कोरिया से आई शोधछात्रा भी शामिल है।

समापन सत्र के दौरान ऐसे संस्कृत विद्वानों एवं प्रशासकों को भी सम्मानित किया गया, जो संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन देने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। प्रशासनिक क्षेत्र से मिरांडा हाउस महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. बिजयलक्ष्मी नंदा एवं किरोड़ीमल महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. दिनेश खट्टर को सुरभारती समुपासक सम्मान से सम्मानित किया गया। यही सम्मान इस वर्ष संस्कृत विद्वानों की श्रेणी में प्रो. दया शंकर तिवारी एवं प्रो. कौशल पंवार को दिया गया। जबकि वाग्भूषण सम्मान डॉ. पंकज कुमार मिश्र, डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय और प्रो. सुषमा चौधरी को मिला। तकनीकी रूप से संस्कृत को बढ़ाने में उत्कृष्ट योगदान हेतु डॉ. सुभाष चन्द्र, डॉ. उमेश कुमार सिंह, डॉ. अवनीन्द पाण्डेय और डॉ. अवधेश प्रताप सिंह को ऋषि अथर्वन सम्मान से नवाज़ा गया। जबकि डिप्टी डीन डॉ. चन्द्र प्रकाश को वाग्श्री सम्मान मिला, जो ऐसे युवा प्रशासनिक पदाधिकारियों को दिया जाता है, जो संस्कृत भाषा के प्रति अत्यंत सकारात्मक सोच रखते हुए इसे आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रहे हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने विविध सम्मान श्रेणियों के बारे में बताते हुए सभी सम्मान प्राप्तकर्ताओं का परिचय दिया। इसी क्रम में पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपने-अपने अनुभव साझा करते हुए सम्मेलन हेतु अपनी शुभकामनाएं दीं ।